देश के
सभी गन्ना किसानों के लिए
संदेश

चीनी की कीमतों में सुधार होना ही चाहिए वरना हम चाहते हुए भी FRP नहीं दे सकते

भारतीय चीनी उद्योग में अभूतपूर्व संकटः

- कई साल की आर्थिक घाटों का बोझ
- शुद्ध मूल्य/पूंजी समाप्त हो गई है, NPA एकाउंट में बढ़ोतरी होगी

गन्ने की कटाई नहीं होगी

कई चीनी मिलें 15–16 के गन्ने के मौसम में अपना कामकाज शुरु नहीं कर सकती हैं

- मिल की मरम्मत, गन्ने के विकास, वेतन एवं मजूरी या कार्यशील पूँजी के लिए धन नहीं जुटा पा रही हैं
- गन्ना बिना कटाई के खेतों में खड़ा रहेगा

पता नहीं है कि आपके गन्ने कीमत कैसे चुकाई जाएः

- रु. 21,000 करोड़ से अधिक का बकाया 35% गन्ने की कीमत की अदायगी नहीं हुई
- यानि कि 50 लाख किसानों को भुगतान नहीं हुआ

गन्ने-चीनी की कीमत को आपस में जोड़ना ही इकलौता समाधान है

पिछले 6 साल में गन्ने का सबसे ज्यादा भंडार और चीनी की सबसे कम कीमत

- 40 लाख टन अतिरिक्त गन्ना
- चीनी की मंदी कीमतेंः प्रति किलो लागत से रु. 8–9 कम
- पिछले 8 महीनों में चीनी की कीमतों में रु. 5–6 प्रति किलो की गिरावट आई है

2009–10 से FRP और अखिल भारतीय औसत एक्स–मिल कीमत

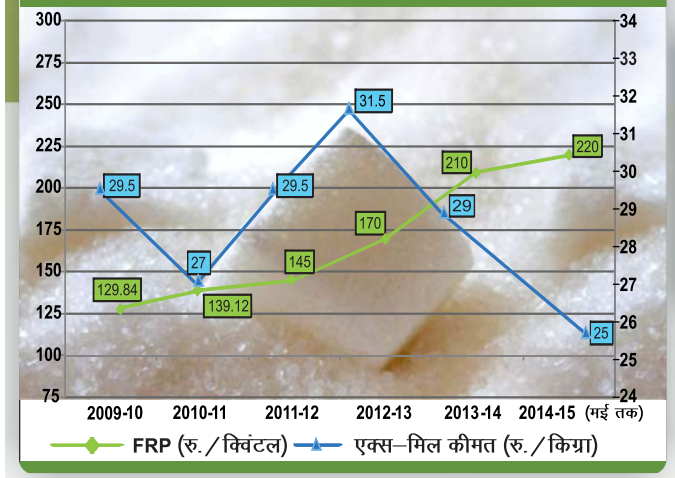

यदि मौजूदा स्थिति में सुधार नहीं हुआः-

वर्तमान वर्ष के गन्ने की कीमत का बकाया राशि का निपटारा नही होगा	गन्ने की कटाई नहीं होगी
2015–2016 के गन्ने के मौसम में चीनी की मिलें अपना कामकाज शुरु नहीं कर पाएंगी	सरकार को गेहूँ और धान की तरह सीधे किसानों को सहायता देनी चाहिए

isma
indian sugar mills association

NFCSF

उत्पादन की अखिल भारतीय औसत लागत बनाम चीनी की एक्स–मिल कीमत